साबर साधनाओं का इतिहास भी उतना ही पुराना है, जितना वेदोक्त साधनाओं का, हर व्यक्ति संस्कृत साहित्य का विद्वान नहीं बन सकता, सम्पूर्ण पूजन विधि का ज्ञान नहीं होता, अपने जीवन में दिन प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए क्या करें? इसका एक ही उत्तर है साबर साधनएँ—जिन्हें भगवान शिव ने स्वयं अपने श्रीमुख से युग-धर्म को देखते हुए सामान्य साधकों के लिए उच्चरित किया।

आज यह सिद्ध है कि साबर साधनाओं का प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि पूर्ण श्रद्धा, विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, साधक को गुरुकृपा का आशीर्वाद निरन्तर प्राप्त होता रहे तब तो हिमालय भी उसके सामने छोटा ही है।

साधना क्या है? साधना तो आत्मा से निकली हुई भाषा है, आह्वान है, जिसे साधक अपनी समस्याओं बाधाओं को दूर करने के लिए, अपने जीवन में निरन्तर श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए शक्ति को जाग्रत करता है। इसके लिए साधक की भावना प्रबल होना सबसे अधिक आवश्यक है और यही तो साबर साधना का रहस्य है, जहाँ श्रद्धा है, गुरु कृपा है, सरलता है, वहीं साबर सिद्धि है।

साबर साधना : महत्वपूर्ण तथ्य

साबर साधना कोई भी व्यक्ति, पुरुष तथा स्त्री किसी भी आयु में सम्पन्न कर सकता है, साधना के समय घी अथवा तेल के दीपक के अलावा अगरबत्ती तथा धूप अवश्य जलाना चाहिए, साबर साधना में कुछ विशेष कार्यों हेतु की साधना उपकरणों की आवश्यकता रहती है और ये सामग्रियाँ प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए, किसी भी मुहूर्त में साधना की जा सकती है, इस हेतु रात्रि का समय विशेष प्रभावकारी माना गया है।

साबर साधना में सर्वाधिक महत्व गुरु का होता है, अतः गुरु पूजा सम्पन्न कर ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे साधना काल के दौरान भयंकर दृश्य अथवा बाधाएँ विपरीत प्रभाव नहीं दे पाती हैं, साधना काल में एक समय का ही भोजन करना उचित रहता है।

साबर साधनाएँ अत्यन्त सरल और सामान्य जन के लिए हैं, इस कारण इसमें किसी प्रकार की त्रुटि रह भी जाती है तो कोई हानि नहीं पहुंचाती, ये साधनाएँ अपने दैनिक क्रियाकलाप के साथ सम्पन्न की जा सकती है, पूर्ण श्रद्धा और विश्वास हो तभी ये साधनाएँ करनी चाहिए। साबर शाह,

ओंकार स्वामी, अमरकण्टक के बाबा औघड़नाथ, भैरवघाटी के निर्भयानन्द कुछ ऐसे साबर साधनाओं के विद्वान हैं जिनके साथ पूज्य गुरुदेव ने साबर साधनाओं के संबंध में विचार-विमर्श किया और इन साधनाओं को परखकर सामान्य जन के लिए प्रस्तुत किया।

साबर साधनाओं का तात्पर्य ऐसी साधनाएँ हैं, जो अपने आप में प्रामाणिक हैं और शीघ्र सफलतादायक हैं, अनुभव में यह आया है कि अन्य साधनाओं की अपेक्षा इनमें शीघ्र और निश्चित सफलता प्राप्त होती है, फिर भी इन साधनाओं के बारे में कुछ ऐसे भी तथ्य हैं, जिनका पालन करना उचित माना गया है–
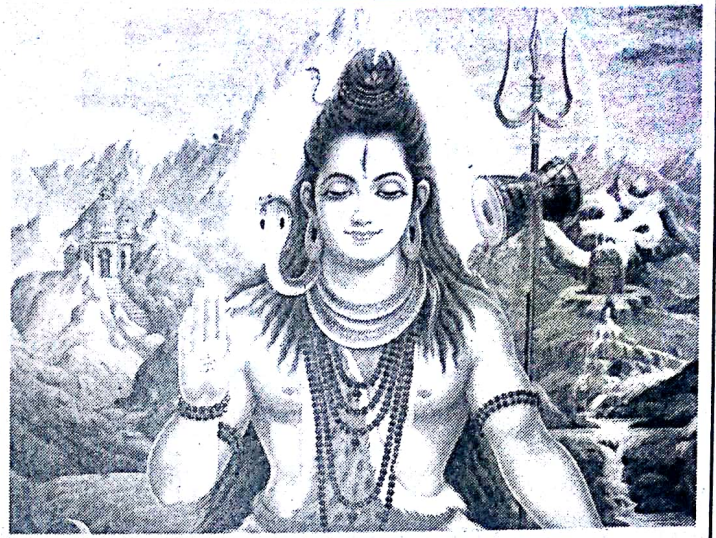
1. साबर साधनाओं को कोई भी जाति, वर्ण, रंग, आयु का पुरुष अथवा स्त्री सम्पन्न कर सकता है।
2. साबर साधनाओं के लिये कोई विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, जहां पर वार या समय दिया हुआ हो, तो उसका पालन करना चाहिए, मगर जहां पर ऐसा उल्लेख नहीं हो, वहां कोई भी साधना शुक्रवार से प्रारंभ की जा सकती है।
3. कुछ विशेष साधनाओं के लिए निश्चित रंग की धोती या आसन आदि का उल्लेख है, परन्तु जहां ऐसा उल्लेख नहीं है, वहां पीले रंग की धोती और पीला आसन मान लेना चाहिए, जहां दिशा आदि का संकेत नहीं हो, वहां साधक को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधना करनी चाहिए।
4. साबर साधनाओं में उपकरणों की विशेष अनिवार्यता मानी गई है, स्थान-स्थान पर ऐसे उपकरणों का उल्लेख भी है, उपकरणों के माध्यम से सफलता प्राप्त हो सकती है, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे उपकरण प्रमाणिक, सही, मंत्र सिद्धि और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, बिना विश्वास के ये उपकरण प्राप्त नहीं करने चाहिए, वे नकली या अप्रामाणिक हो सकते हैं, ऐसी स्थिति में सफलता प्राप्ति में सन्देह ही रहता है।
5. साधना में चाहे तो घी या तेल का दीपक लगाया जा सकता है, किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, जब तक साधना में मंत्र जप चले तभी तक दीपक लगाये रखना उचित है, अगरबत्ती या धूप किसी भी प्रकार का प्रयुक्त हो सकता है, परन्तु साबर साधनाओं में लोबान की अगरबत्ती या धूप की विशेष महत्ता मानी गई है।
6. अलग-अलग मालाओं का विधान है, परंतु जहां माला का विधान या माला के बारे में संकेत नहीं है, वहां हकीक माला समझनी चाहिए, किसी भी माला में 108 मनको की अनिवार्यता नहीं है, 100 मनके एक माला में होने चाहिए यदि माला, मंत्र जप के बीच टूट जाये तो चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, उसे पुनः धागे में पिरोया जा सकता है।
7. साधनाकाल में कई प्रकार के संकेत मिल जाते हैं, परंतु साधना के बीच में विचलित होने की आवश्यकता नहीं है, जितनी संख्या दी गई है, उतनी संख्या में मंत्र जप अनिवार्य मानना चाहिए तभी साधना पूर्ण होती है।
8. यदि साधनाकाल में कोई भयानक दृश्य दिखाई दे, तो घबराने की या विचलित होने की जरूरत नहीं है, किसी भी प्रकार का अहित साधक के जीवन में नहीं हो सकता, अतः निश्चिंत होकर साधना सम्पन्न करें।
9. एक साधना सामग्री में एक बार ही साधना सम्पन्न होती है, अन्य साधनाओं या दूसरी साधना के लिये पुनः उपकरण या सामग्री प्राप्त करनी चाहिए, तभी सफलता मिलती है।
10. साबर साधनाओं में गुरु की विशेष महत्ता मानी गई

है, अतः साधना काल में गुरु का चित्र या मूर्ति स्थापित करनी चाहिए और नित्य उनसे अनुमति लेकर साधना सम्पन्न करनी चाहिएं।

11. साबर साधनाओं में पूर्ण श्रद्धा होनी आवश्यक है, अधूरा विश्वास या मंत्रों अथवा यंत्रों पर अश्रद्धा होने पर सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

12. साधना काल में यथासमय एक समय भोजन करें और ब्रह्मचर्य पालन करें, तो ज्यादा उचित रहता है।

13. साबर साधनाएँ दिन को या रात्रि को किसी भी समय सम्पन्न की जा सकती है।

14. साबर साधनाएँ वर्तमान जीवन का वरदान हैं, यद्यपि ये साधनाएँ अधिकतर गुप्त रही हैं, यदि ऐसी साधनाएँ प्राप्त होती है, तो जीवन का सौभाग्य मानना चाहिए, यदि किसी कारण से एक बार में सफलता न मिले तो बार-बार प्रयत्न करना चाहिए, यद्यपि यह सही है, कि साबर साधनाओं में अन्य साधनाओं की अपेक्षा शीघ्र सफलता मिलती है।

साबर साधनाएँ ही क्यों?

युग के अनुरूप अपने आपको ढालकर जो व्यक्ति कार्य करते हैं, उन्हें जीवन में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है वैदिक और पौराणिक काल में संस्कृत की महत्ता थी, उनके पास समय भी था और लम्बी आयु होने की वजह से वे ऐसी साधनाएँ कर सकते थे, जिसमें संस्कृत उच्चारण हो और लम्बे समय तक सम्पन्न होने वाली साधनाएं हों।

परन्तु निम्न बारह कारणों से आज के युग में साबर साधनाएँ सबसे ज्यादा उपयोगी और महत्वपूर्ण मानी गई हैं–

1. वर्तमान में उच्चकोटि के योगी संन्यासी और सिद्धाश्रम के साधकों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है, कि आज के युग में साबर साधनाएँ शीघ्र सफलतादायक और निश्चित परिणाम देने में समर्थ हैं।

2. इन साधनाओं में जटिल विधि विधान, क्रिया कलाप, पवित्रता आदि की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी अन्य दैविक साधनाओं में होती है।

3. ये साधनाएँ सरल भाषा में हैं, इसलिये संस्कृत न जानने वाले भी इन साधनाओं को और सम्बन्धित मंत्रों को भली प्रकार से उच्चरित कर सकते हैं तथा सफलता पा सकते हैं।

4. ये कम समय में पूर्णता के साथ सफलता देने में सहायक है।

5. इन साधनाओं में किसी भी प्रकार की त्रुटि रह भी जाए तो किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

6. इन साधनाओं को पुरुष, स्त्री या बालक तथा किसी भी वर्ण, जाति का व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है तथा सफलता पा सकता है।

7. इसमें जटिल क्रियाकलाप नहीं है और ये शीघ्र सफलता देने में समर्थ है।

8. अन्य साधनाओं में जहां सवा लाख या पांच लाख मंत्र जप करने होते हैं, वहीं इन साधनाओं में कम संख्या में मंत्र जप की आवश्यकता होती है।

9. वर्तमान युग की अनिवार्यताएँ और आवश्यकताएँ अलग प्रकार की हो गई हैं, और ये मंत्र तथा साधना विधियां उसी के अनुरूप हैं, अतः इनके माध्यम से हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की समस्याओं को भली प्रकार से सुलझा सकते हैं।

10. यदि साधनाओं में प्रयुक्त उपकरण सही और प्रामाणिक हों तो साधना में सफलताएँ निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती हैं।

साबर साधनाएँ अत्यन्त सरल और सामान्य जन के लिए हैं, इस कारण इसमें किसी प्रकार की त्रुटि रह जाती है तो कोई हानि नहीं पहुँचाती, ये साधनाएँ अपने दैनिक क्रियाकलाप के साथ सम्पन्न की जा सकती है, पूर्ण श्रद्धा और विश्वास हो तभी ये साधनाएँ करनी चाहिए। साबर शाह, ओंकार स्वामी, अमरकण्टक के बाबा औघड़नाथ, भैरवघाटी के निर्भयानन्द कुछ ऐसे साबर साधनाओं के विद्वान हैं जिनके साथ पूज्य गुरुदेव ने साबर साधनाओं के संबंध में विचार-विमर्श किया।

11. वर्तमान युग में सभी साधकों और योगियों ने स्वीकार किया है, कि कलियुग में साबर साधनाएँ ज्यादा प्रामाणिक और शीघ्र सफलतादायक हैं।

12. इनका प्रभाव अचूक, तुरन्त और पूर्णता के साथ होता है।

साबर साधनाओं के बारे में सावधानियाँ

1. इन साधनाओं में गुरु पूजन का विशेष महत्व होता है, अत: साधनाओं के प्रारम्भ में गुरु पूजन अवश्य करना चाहिए।

2. मंत्र जप का शुद्ध रूप से उच्चारण होना चाहिए।

3. साधना काल में कुछ विशेष दृश्य दिखाई दे सकते हैं, डरावने भी दिखाई दे सकते हैं। अत: इस सम्बन्ध में विचलित होने की आवश्यकता नहीं है।

4. साधना में पुरुष और स्त्री का कोई भेद नहीं है, अत: कोई भी इस प्रकार की साधना को कर सकता है, रजस्वला समय में ये साधनाएँ सम्पन्न नहीं की जानी चाहिए।

5. ये साधनाएँ घर के किसी एकान्त कक्ष में या मंदिर में, धर्मशाला में नदी किनारे या जंगल में कर सकते हैं एकान्त कक्ष का अभाव हो तो रात्रि के समय साधना एवं मंत्र जप सम्पन्न किया जा सकता है।

6. साबर साधनाओं को सम्पन्न करने में या साधना अधूरी छूट जाने पर अथवा साधना में न्यूनता रहने पर किसी प्रकार की हानि नहीं होती और न ही कोई नुकसान होता है, इसीलिये इन साधनाओं की महत्ता वर्तमान युग में विशेष रूप से है।

7. इन साधनाओं का उपयोग किसी का अहित करने में न करें, इस बात का विशेष ख्याल रखें।

और यों सफलता प्राप्त करें-

1. सर्वप्रथम प्रामाणिक यंत्र अथवा सामग्री लें, या प्राप्त कर लें।

2. फिर मन में निश्चय कर लें कि मुझे यह प्रयोग सम्पन्न करना ही है।

3. साधना में पवित्र होकर शुद्ध स्थान पर बैठ जाएं, गुरु चित्र की पूजा कर अनुमति लें, कि आपको सफलता मिले।

4. फिर हाथ में जल लेकर संकल्प भरें, कि मैं यह प्रयोग 'अमुक सिद्धि के लिए' या अमुक इच्छा की पूर्ति के लिए कर रहा हूँ फिर जल जमीन पर छोड़ दें।

5. अपनी इच्छा और साधना को गोपनीय रखें।

6. साधना में सफलता मिलने पर भी संयत बने रहे।

साबर साधना-विशेष सावधानी

जब कोई व्यक्ति किसी गन्दी विचारधारा से किसी प्रकार से तन्त्र का प्रयोग करता है तो सफलता के स्थान पर उसे हानि ही उठानी पड़ती है और साबर साधनाओं में तो यह बात विशेष रूप से लागू होती है, किसी गलत कार्यों को करने हेतु अथवा गलत उद्देश्य से यह साधना वर्जित है, शत्रु का नाश होना चाहिए, यह सही बात है, लेकिन आप जानबूझ कर अपने आनन्द के लिए किंसी सही व्यक्ति पर तन्त्र प्रयोग करते हैं तो यह गलत है।

नीचे कुछ विशेष साबर मन्त्र और उसकी विधि स्पष्ट की जा रही है, जो विधि अनुसार ही सम्पन्न करनी चाहिए।

भूत-प्रेत बाधा उतारने का साबर प्रयोग

शुक्रवार से शुरू कर अगले शुक्रवार तक नित्य ग्यारह माला रात को फेरें, निम्न मंत्र को सिद्ध करते समय सामने तेल का दीपक लगायें और **'हनुमान की चौकी'** जो कि ताबीज के आकार की होती है, उसे चौकी पर नजर डालता हुआ **'हकीक माला'** से मन्त्र जपें।

अगले शुक्रवार को जब मन्त्र पूरा हो जाय तो चौकी को काले धागे में पिरो कर दाहिनी भुजा पर बांध दें, जिससे कि जीवनभर उसकी रक्षा रहेगी और कोई तकलीफ नहीं होगी।

फिर जब किसी को भूत प्रेत लगा हो तब नीचे लिखे मन्त्र का तीन बार उच्चारण चिमटे से जमीन पर पीटते हुए करें, तो उसका भूत-प्रेत चीखता-चिल्लाता हुआ भाग जाता है और फिर कभी भी उसे कष्ट नहीं होता।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का पिण्ड प्राण छोड़े देब

दानव भूत-प्रेत डाकिनी तुरन्त छोड़े दूसरी ठौर करे, इसकी रक्षा हनुमत बीर करे, जो न करे तो मां अंजनी दुहाई, सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

साधना सामग्री 330/-

आर्थिक उन्नति का साबर प्रयोग

स्वयं बुधवार को सुबह सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायं, सामने **'सुलेमानी हकीक'** रख दें और उस पर नजर डालता हुआ पांच माला मन्त्र जप करें, **हरी हकीक माला** से मन्त्र जप हो, मन्त्र जप के बाद उस **'सुलेमानी हकीक'** को अंगूठी में जड़वा कर धारण कर लें तो जिस कार्य या व्यापार में हाथ डालें वह पूरी तरह से सफल होता है या विशेष आर्थिक लाभ होता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्मा श्रीं ॐ ह्रीं पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम धन द्रव्य आवे सर्वजन्य वश्य कुरु कुरु नमः।

इसे एक ही दिन में पांच माला मन्त्र जप से सिद्ध किया जाता है।

साधना सामग्री 240/-

शत्रु स्तम्भन साबर प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायं, सामने सात गोमती चक्र रख दें और उन पर कुंकुम की बिन्दियां लगावें, फिर हकीक माला से 11 माला मंत्र जप करें।

मन्त्र

ॐ वीर वेताल धरती कांपै गगन गरजे मेरे शत्रु 'अमुक' का नाश करे मेरे मन को शूल दूर करे 'अमुक' कार्य में सफलता दे जो न दे तो रुद्र को त्रिशूल खावे।

11 माला मन्त्र जप होने के बाद वे सातों गोमती चक्र घर के बाहर जमीन में गाड़ दें तो निश्चय ही उसे इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

इस मन्त्र में पहले **'अमुक'** के स्थान पर शत्रु का नाम लें और दूसरे अमुक के स्थान पर उस कार्य का उल्लेख करें जो कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करना चाहते हैं।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, गोमती चक्र पूर्ण शत्रु स्तम्भन मन्त्र से सिद्ध हो, मन्त्र जप में हकीक माला का ही प्रयोग होना चाहिए।

साधना सामग्री 330/-

पूर्ण ग्रहस्थ सुख साबर प्रयोग

पूर्ण गृहस्थ सुख बहुत कम व्यक्तियों के भाग्य में मिलता है, पति-पत्नी के विचारों में मतभेद, घर में नित्य कलह चलते ही रहते हैं तो फिर जीवन का आनन्द कहाँ?

इस साधना हेतु दो मन्त्र प्रयोग विशेष रूप से प्रस्तुत हैं, पहले प्रयोग से घर की बाधाओं, विपत्तियों का नाश होता है और किसी की नजर का प्रभाव भी नहीं पड़ता, इस हेतु किसी भी शनिवार को अपने सामने **'गृह बाधा हरण यन्त्र'** रात्रि को स्थापित करें, सामने गुग्गल का धूप जलाएं तथा मिठाई, फल, पुष्प तथा तेल रखें और दूसरी ओर घी का दीपक जलाएं, यन्त्र के चारों ओर काजल से एक गोल घेरा लगा दें और 21 दिन तक नित्य 108 बार निम्न मन्त्र जप

अवश्य करें, इसमें मन्त्र सिद्ध **'पलान्जा काष्ट'** का प्रयोग विशेष है, इसे घेरे के बाहर रखें और साधना पूर्ण होने पर अपने घर से बाहर गाड़ दें।

मन्त्र

।। ॐ शं शां शिं शीं शुं शूं शें शैं शों शौं शं
शः स्वः सं स्वाहा।।

साधना सामग्री- 210/-

दूसरा प्रयोग

साधक मन्त्र का जप कर दो पुड़िया बनाएं प्रत्येक पुड़िया में एक मुट्ठी सरसों और **'गोमती चक्र'** बांधें और उस पर अपना नाम लिखें, दोनों पुड़ियाओं पर मन्त्र जप के समय सिन्दूर लगाएं, 108 बार मन्त्र जप एक पुड़िया को सामने रख कर करें और फिर 108 बार मन्त्र जप दूसरी पुड़िया रख सिन्दूर चढ़ा कर करें, मन्त्र जप के पश्चात् दोनों पुड़ियाओं को साथ-साथ बांध कर भूमि में गाड़ दें तो अत्यन्त प्रेम रहता है।

मन्त्र

बिसमिल्ला मेहमंद पीर आवे घोड़े की असवारी पवन को वेग मन को संभाले अनुकूल बनावे हां भरे कहियो करे मेहमंद पीर की दुहाई सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

साधना सामग्री (दो गोमती चक्र)- 120/

सर्व रोग-पीड़ा हरण साबर प्रयोग

कभी पेट का दर्द, कभी कमर का दर्द, तो कभी सिर का दर्द तो कभी आलस्य, बेचैनी इस प्रकार हर समय कोई न कोई शारीरिक पीड़ा चलती रहे तो सोमवार के दिन प्रातः साधना प्रयोग प्रारम्भ करें, अपने सामने एक ताम्र पात्र में जल रखें, इसके सामने तीन ढेरी नमक की तथा तीन ढेरी राईकी बनाएं, पात्र के भीतर **'आदिशक्ति महायन्त्र'** रखें और **'हरी हकीक माला'** से एक माला मन्त्र जप प्रति सोमवार करें।

ॐ नमो भगवते गरूडायामृतमयशरीराय सर्वरोगविध्वंसनाय कृत्यानेकविदारणाय भूतप्रेत पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि गरूडादु रोगान् दूरी करो चेत्कुदाडु सटी पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि ये गरूडादु रोगान् दूरी करो चेत्दाडु सटी पिशाचकुमार सारी आदि रूद्र के आणु निर्मल करो चेत्कुदाडु आदिशक्ति के आणुमारू खिदाडी ॐ गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर वाचा।

प्रति सोमवार मंत्र जप के पश्चात् यह जल रोगी व्यक्ति को पिला दें तथा राई और नमक तवे पर डाल दें और फिर राख दूर फेंक दें, वैसे तो यह प्रयोग ग्यारह सोमवार का है, लेकिन इतना अधिक सिद्ध और अचूक साधना है, कि तीसरे सोमवार से ही प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होने लगता है।

साधना सामग्री 330/

व्यापार लाभ प्रयोग

व्यापार वृद्धि, बिक्री बढ़ाने और निरन्तर लाभ होने के लिये इस प्रयोग को प्रमाणिक बताया है, बुधवार के दिन अपने सामने **'पद्म गुटिका'** किसी पात्र में रख दें और उसके सामने **विजय माला** से 21 माला मंत्र जप करें। इस प्रकार केवल तीन दिन प्रयोग करें, मंत्र पढ़ते समय सफेद धोती पहने, इसके अलावा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, अपना मुंह पूर्व दिशा में रख।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत
विधोयं अर्हं नमः।

जब तीन दिन प्रयोग समाप्त हो जाय तब वह विजय माला गले में धारण कर लें या वह सिद्ध की हुई 'गुटिका' दुकान में या गल्ले में अथवा जहां पर रूपये-पैसे रखते हैं, वहां पर रखे तो व्यापार निरन्तर बढ़ता ही रहता है।

वस्तुतः प्रत्येक व्यापारी बंधु को यह प्रयोग करना ही चाहिए।

साधना सामग्री- 300/

रोग नाशक प्रयोग

घर में किसी को बुखार आ गया हो, या किसी प्रकार का रोग हो या ऐसी स्थिति बन गई हो कि घर में कोई न कोई रोगी बना रहता हो, रोग पर बराबर चर्चा होती रहती हो या बीमारी से परेशान हो गया हो तो यह प्रयोग अचूक माना है।

किसी भी शुक्रवार को अपने सामने **तीन मूंगे के टुकड़े** रख दें, जो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, फिर इस पर जल धार चढ़ावे और फिर दूध से धोकर फिर जल चढ़ावे, जल चढ़ाते समय निम्न मंत्र का 108 बार उच्चारण करे, इसके बाद मूंगे के टुकड़े निकाल कर अलग रख दे और वह दुग्ध मिश्रित जल पूरे घर में छिड़क दे तथा एक चम्मच रोगी को पिला दे।

इस प्रकार मात्र तीन दिन प्रयोग करे तो घर से बीमारी हमेशा-हमेशा के लिये चली जाती है और रोगी को तुरन्त आराम मिलता है।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नमः।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमाया हुआ है और महत्वपूर्ण है।

साधना सामग्री 150/

लगाया हुआ है, वह घर में या बाहर बांट दें।

मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ मा नमः।

वस्तुतः यह सिद्ध प्रयोग है, श्वेतार्क गणपति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होते हैं, परंतु मंत्र सिद्ध गणपति प्राप्त हो जाय, तो जरूर घर में स्थापित कर लेने चाहिए क्योंकि यह प्रयोग कई पीढ़ियों के लिये सहायक बने रहते हैं।

साधना सामग्री 300/

फौजदारी दीवानी मुकदमा निवारण प्रयोग

नहीं चाहते हुए भी कई बार मुकदमों में उलझना पढ़ता है और ऐसी स्थिति में जीतना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है, यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, मुकदमे के दिन **'विजय मंत्र'** के सामने निम्न मंत्र की एक माला अर्थात् 108 बार उच्चारण करके जावे तो निश्चय ही उसके हक में ही निर्णय होता है, उस दिन जो भी बहस होती है, वह भी उसके हक में ही होती है, इससे मुकदमे के जीतने के आसार बढ़ जाते हैं, शत्रु या विरोधी पक्ष परास्त हो जाता है, वह या तो समझौता कर लेता है या अपनी हार मान लेता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी कार्यसिद्ध विजयं देहि देहि स्वाहा।

यह प्रयोग पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

साधना सामग्री 150/